उपसंहार : *प्रेम की ओर . . .*

१५ फ़रवरी, २०२४

आत्मीय पाठक,

अब तक, आप सिखावनियों को पढ़ चुके होंगे। आप सुन चुके होंगे; अपने चिन्तन-मनन की प्रक्रिया के दौरान आपने इसके साथ दिए गए संगीत को अपने चिन्तन-मनन के मूल में, उसके ऊपर और उसके चारों ओर गूँजने दिया होगा। सन्त वैलेन्टाइन दिवस के उपलक्ष्य में, श्रीगुरुमाई ने हमें प्रदान किया है ‘प्रेम की ओर’ जो कि प्रेम के विषय पर उनकी सिखावनियों का एक विस्मयजनक और अतीव प्रभावकारी संग्रह है; १ फ़रवरी २०२४ से लेकर १४ फ़रवरी के बीच, हर दिन एक-एक सिखावनी सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर पोस्ट की जाती रही है।

आप इन सिखावनियों के साथ कार्यरत हुए हैं, इस बात पर मुझे इसलिए यक़ीन है क्योंकि—आपने ऐसा कहा है! या फिर, स्पष्ट तौर पर कहूँ तो आप अपनी अन्तर्दृष्टियाँ और अनुभव सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर भेजते रहे हैं। आपके अनुभवों व समझ को पढ़ने में मुझे बहुत आनन्द आया; हालाँकि कई लोग जो लेख व किताबें पढ़ते हैं, वे उस लेखन पर विचारशीलता के साथ अपनी प्रतिक्रिया देते हैं, परन्तु मैंने देखा है कि सिद्धयोगीजन जो बताते हैं, उसमें एक विशेष बात होती है। यह स्पष्ट है कि गुरुमाई जी ने अपनी सिखावनियों का अध्ययन करने, उनका अभ्यास करने, उन्हें आत्मसात् करने व दैनिक जीवन में उनका पालन करने के विषय में हमें जो सिखाया है, उसे आपने अपने हृदय में धारण किया है। और यहाँ, प्रेम के विषय में गुरुमाई जी के मार्गदर्शन, ‘प्रेम की ओर’ के साथ भी आपने यही किया है।

एक ओर तो दिलचस्प बात यह है कि प्रेम ऐसी चीज़ है जिसे हम सभी जानते हैं, हम सभी इसे समझते हैं और हम सभी ने इसका अनुभव किया है। हम इस बात से परिचित हैं कि प्रेम कितने ही रूपों में अभिव्यक्त होता है—यह अजीबोग़रीब ढंग से अभिव्यक्त हो सकता है और यह पूरी तरह उदात्त रूप में भी अभिव्यक्त हो सकता है। [हम सभी ने देखा कि कोई व्यक्ति किस प्रकार प्रेम के नाम पर ऐसा निर्णय ले लेता है जिस पर प्रश्न उठाया जा सके, और हो सकता है हमने खुद भी ऐसा किया हो!]

कुछ वर्ष पूर्व मैं इसी विषय पर गुरुमाई जी से बात कर रही थी। वर्ष २०२२ की दीपावली के उपलक्ष्य में उनके द्वारा लिखित कविता की एक पंक्ति के बारे में मैं उनसे पूछ रही थी। गुरुमाई जी ने लिखा था : *जब प्रेम हो जाता है तब सब कुछ उज्ज्वल हो जाता है।* इस पंक्ति ने मेरा ध्यान आकृष्ट किया; 'प्रेम हो जाता है' गुरुमाई जी द्वारा प्रयुक्त इन शब्दों से मेरे मन में कौतूहल उत्पन्न हुआ। यह ऐसी भाषा है जिसे आम तौर पर प्रणय-भावना यानी रोमांस सम्बन्धी प्रेम से जोड़ा जाता है, फिर भी उस समय मैं समझ गई थी कि इस कविता में गुरुमाई जी जिस प्रेम के बारे में कह रही हैं वह इसी एक पहलू तक ही सीमित नहीं है।

गुरुमाई जी ने समझाया कि उन्होंने जानते-बूझते इन शब्दों का प्रयोग किया है। 'प्रेम हो जाना' यह अनुभव ऐसा है जो कई लोगों के लिए जाना-पहचाना-सा है—वह एहसास जब ऐसा लगता है कि सूरज के प्रकाश में चमचमाता कोहरा सब ओर छाया हुआ है, वह ख़ूबसूरत-सा पल ऐसी उत्सुकता से, ऐसे विस्मय से भरा होता है कि ऐसा लगता है कि रात के आसमान के सभी तारे बाहर ही नहीं, अपने अन्दर भी चमचमा उठे हों। और, हालाँकि यह एहसास किसी विशिष्ट परिस्थिति में ही होता होगा, फिर भी प्रेम हो जाने का यह अनुभव मूलतः बृहत प्रेम का ही भाग है। इस प्रकार, यह अनुभव एक सन्दर्भ-बिन्दु प्रदान करता है जिसकी सहायता से हम प्रेम को उस रूप में समझ सकते हैं जैसा कि गुरुमाई जी इसके बारे में सिखाती हैं। गुरुमाई जी ने आगे समझाया : "किसी व्यक्ति को या एक पेड़ को या किसी भी चीज़ को देखकर तुम्हारा हृदय जिस तरह आह्लादित हो उठता है, प्रकाश की जिस चमचमाती किरण को तुम महसूस करती हो—यह एहसास दिव्य प्रेम से भिन्न नहीं है।"

तो, प्रेम की अनुभूति करने के अनेक मार्ग हैं, इस अनुभूति तक पहुँचने के अनेक प्रवेश-द्वार हैं, और हम इनसे भलीभाँति परिचित हैं। साथ ही, मैंने देखा है कि प्रेम के बारे में अनेक भ्राँतियाँ भी हैं। अब, सबसे पहले मैं ही इस बात को स्वीकार करती हूँ कि मैं एक रोचक प्रेम-कहानी पढ़ने या प्रेम-गीत को सुनने के लिए हमेशा उत्सुक रहती हूँ। [कम से कम, अपने बारे में तो मेरा ऐसा मानना है कि प्रेम के विषय में मैं माहिर हूँ।] लेकिन, मैंने जो पढ़ा है, देखा और सुना है—और यहाँ तक कि मेरे अपने जीवन में कुछ लोगों ने मुझे जो बताया है—उसमें मैंने एक प्रवृत्ति झलकती देखी है जिसमें उनका यह मानना है कि जहाँ प्रेम है वहाँ दुःख और पीड़ा तो होगी ही। ऐसा प्रतीत होता है कि आम तौर पर लोग ऐसा समझते हैं कि इनमें से एक न हो तो आपको दूसरा भी नहीं मिल सकता। और जब बात आती है किसी प्रेम-कहानी की तो हमेशा होता यह है कि संघर्ष, विरोध या अनिश्चितता कहानी का भाग होते हैं और यही संघर्ष व अनिश्चितता ही कहानी की रोचकता को बनाए रखते हैं, इन्हीं के आधार पर कहानी आगे बढ़ती है, और यही दर्शकों या श्रोतागण को कहानी में रम जाने के लिए आकर्षित करता है। ऐसा

लगता है कि अपने आप में प्रेम और साथ ही उससे जुड़ी भावनाएँ जैसे कि, खुशी, शान्ति, समर्पण लोगों का ध्यान बनाए रखने के लिए न ही इतनी चित्ताकर्षक होती हैं और न ही उनमें कोई नवीनता होती है कि लोग देर तक उस कहानी को पढ़ते या सुनते रह सकें।

तथापि, प्रेम को लेकर मेरे अपने अनुभव, और विशेष तौर पर उस प्रेम के अनुभव जो गुरुमाई जी ने मुझे दिखाया और सिखाया है, वे इस मान्यता के विपरीत हैं। मुझे याद है, एक बार गुरुमाई जी मुझे प्रेम की प्रकृति और शिष्य के प्रति गुरु के प्रेम के बारे में समझा रही थीं। सीधे मेरी आँखों में देखते हुए उन्होंने मुझसे कहा, "मेरा प्रेम तुम्हारे लिए कभी कम नहीं हो सकता।" उन्होंने अपनी बाँह आकाश की ओर उठाई। "यह प्रेम केवल ऊपर, और अधिक ऊपर की ओर ही बढ़ सकता है, वायुमण्डल से होता हुआ, ब्रह्माण्ड से भी ऊपर।" उन्होंने ज़मीन की ओर इशारा किया। "यह प्रेम केवल गहरे से गहरा ही हो सकता है, इस पृथ्वी के गर्भ तक।"

उस पल में मेरे लिए यह कहना कठिन था कि क्या मेरे सिर के ऊपर का आसमान खुल रहा है [निःसन्देह कहीं न कहीं ज़रूर फ़रिश्ते गा रहे होंगे] या मेरे पैरों तले की ज़मीन चल रही है। परन्तु मुझे इसकी एक झलक अवश्य मिली—मैंने देखा कि गुरुमाई जी जिस प्रेम की बात कर रही हैं, वह कितना विशाल है, वह अनन्तता तक विस्तृत हो सकता है, उसमें असीमित ऊर्जा है। मुझे एहसास हुआ कि मैंने कितना समय यह सोचते-सोचते बिता दिया है कि आख़िरकार क्या मेरे लिए प्रेम *होगा*—मैं यह चिन्ता करती रही थी कि यह कब तक बना रहेगा, न जाने यह कब चला जाए। फिर भी, असल सवाल यह था, कि क्या *मैं* प्रेम को पहचान सकूँगी—और फिर जब मैं इसमें गोता लगाकर इसकी गहराइयों में उतरती जाऊँ तो मुझे क्या-क्या खोजने को मिलेगा। इसकी सम्भावनाएँ रोमांचकारी और स्फूर्तिवर्धक थीं।

यह मुझे सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर दी गई गुरुमाई जी की सिखावनियों की ओर ले आता है। 'प्रेम की ओर'। आपके अनुभवों को पढ़कर मुझे लगा कि आप भी प्रेम की इस बारीकी को समझ रहे हैं, आप यह समझ रहे हैं कि प्राचीन भारत के ऋषि-मुनि जिसे 'द्वन्द्व' [सुख-दुःख, लाभ-हानि, इत्यादि] कहकर सम्बोधित करते हैं, प्रेम उससे पृथक है व उससे भी परे है। उदाहरण के लिए, चौथी सिखावनी की अपनी समझ बताते हुए आपमें से एक ने लिखा : "मैंने पाया है कि प्रेम को अनुभव करने के लिए, मुझे प्रयत्न करना होगा कि मैं *उसे उसी रूप में* पहचानूँ जैसा कि *वह है*. . . यदि मैं उस पर अपनी पूर्वधारणाएँ लादने की कोशिश करूँ तो प्रेम के रहस्यमय सान्निध्य और उसके प्रवाह के लोक में मेरा प्रवेश न हो सकेगा . . . यह ऐसा ही है मानो अपने आप को इस जादुई लोक के प्रति समर्पित करते ही मुझे सहज ही इसमें प्रवेश करने की स्वीकृति मिल गई हो।"

आपमें से कई लोगों ने ‘प्रेम की ओर’ में निहित गुरुमाई जी की सिखावनियों की अपनी समझ को वर्ष २०२४ के लिए उनके नववर्ष-सन्देश के अपने अध्ययन से भी जोड़ा। आपको अधिक गहराई से यह समझ में आया कि ‘आत्मगौरव’ में क्या निहित है और उसके लिए क्या आवश्यक है। एक व्यक्ति ने बताया, “आत्मगौरव को बनाए रखने के लिए मुझे प्रेम को महत्त्व देना होगा, उसकी क़द्र करनी होगी।” आपने ‘कृपा के प्रति खुले रहने’ की बात की, और ऐसा करने से, प्रेम की ओर अपने मार्ग पर चलते हुए आपको जो अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त हुईं, जो समझ उजागर हुई और जो संयोग आपके समक्ष उभरे उनके बारे में भी आपने लिखा। सबसे बढ़कर बात तो यह है कि आपके अनुभव इस बात को वर्णित करते हैं व साथ ही प्रत्यक्ष रूप से दर्शाते भी हैं कि ‘अपनी दिव्यता से जुड़े रहने’ के लिए आप कितना प्रयत्न कर रहे हैं। आपने बताया कि प्रेम को याद रखने व उसकी ओर बढ़ने का प्रयत्न एक तरीक़ा है जिससे आप इस अन्तर-सम्बन्ध को, इस आन्तरिक जुड़ाव को बनाए रख रहे हैं।

मैं इस वर्णन से सहमत होना चाहती हूँ। हाल ही में मैं दो सिद्धयोगियों से बात कर रही थी जो एक छोटे-से बालक के माता-पिता हैं। उन्होंने मुझे बताया कि जनवरी में एक विशिष्ट दिन पर उनका बेटा सोने से पहले गुरुमाई जी के बारे में एक कविता लिखने की ज़िद करने लगा। तो, अगले कुछ दिनों तक वह यही करता रहा; वह गुरुमाई जी के प्रति अपने प्रेम को व्यक्त करने के लिए हर रोज़ एक कविता लिखता रहा।

यह कहानी सुनकर मैं अविश्वास के साथ मुस्कराई। बात ऐसी है कि जनवरी माह के उसी दिन गुरुमाई जी ने मुझे *अपनी* इच्छा बताई थी कि वैलेन्टाइन दिवस के उपलक्ष्य में, वे हर दिन के लिए एक सिखावनी लिखना चाहती हैं। मेरे लिए यह बिलकुल स्पष्ट था—वह नन्हा बालक एकलय था। और जैसा कि उसने किया, अपने हृदय के प्रेम का सम्मान करके, वह अपने ही तरीक़े से यह सुनिश्चित कर रहा था कि वह ‘जुड़ा रहे’।

आपको याद होगा कि गुरुमाई जी ने ही इस वर्ष के अपने सन्देश के सन्दर्भ में प्रेम के विषय में पहली बार सिखाया था। ७ जनवरी को, श्रीगुरुगीता पाठ की वर्षगाँठ के सम्मान में आयोजित सीधे वीडिओ प्रसारण सत्संग के दौरान, गुरुमाई जी ने सत्संग में भाग ले रहे, सिद्धयोग के तीन स्वामीगण से सन्देश के बारे में अपने अनुभव बताने के लिए कहा था। गुरुमाई जी ने इन स्वामीगण से अपने अनुभव व समझ बताने के लिए इसलिए कहा क्योंकि वे जानती हैं कि इनमें से हर एक स्वामी, उनके नववर्ष-सन्देश का

अभ्यास करने हेतु एक विशिष्ट योजना बनाते हैं और इसीलिए वे जो कुछ बताएँगे, उसे सुनने से श्रोताओं को उपयुक्त अन्तर्दृष्टियाँ प्राप्त होंगी।

जैसा कि उनसे अपेक्षित था, तीनों स्वामीगण ने बहुत ही ठोस और उपयोगी विवरण दिए। और उनमें से एक स्वामी जी ने जो बताया, उसका मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूँगी। वे स्वामी जी जिस तरीक़े को अपनाकर गुरुमाई जी के नववर्ष-सन्देश का अभ्यास करते हैं उसके विषय में बताने के बाद, उन्होंने कहा कि उनके लिए सन्देश के शब्दों के अर्थ को आत्मसात् करना कितना सहज रहा है—उदाहरण के लिए, 'आत्मगौरव में सिर उठाकर खड़े रहो।' फिर विनोदप्रियता और विनम्रता के मिश्रित भाव से, अपने विलक्षण ढंग में स्वामी जी ने कहा, "वैसे भी, आत्मगौरव कभी मेरा मज़बूत या विशेष गुण नहीं रहा है। तो यह विस्मयजनक था।"

जब स्वामी जी ने ऐसा कहा, गुरुमाई जी हँसी; स्वामी जी भी हँसे; हम सब हँसे! शायद यह अपेक्षित ही था—ये स्वामी जी बच्चों और बड़ों को समान रूप से प्रिय हैं, और उनमें एक विलक्षण गुण है कि वे जहाँ भी होते हैं और जहाँ भी जाते हैं, वहाँ वे आनन्द बिखेरते हैं। जब स्वामी जी आस-पास होते हैं तो उनके सान्निध्य में होते हुए सभी लोग खिलखिलाकर हँसते हैं।

जब स्वामीगण अपने स्थान पर बैठ गए तो गुरुमाई जी मुस्कराईं और उन्होंने कहा, "मैं कुछ कहना चाहती हूँ। स्वामी जी आप में महान आत्मगौरव *है।"* गुरुमाई जी ने आगे समझाते हुए कहा कि आत्मगौरव के कई रूप होते हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रकार आत्मगौरव प्रेम के समान है।

फिर गुरुमाई जी ने यह प्रश्न पूछा : "प्रेम क्या है?" जब हम सभी इस पर विचार करने लगे तब उन्होंने कुछ सम्भावित उत्तर दिए—प्रेम के अन्तर्गत क्या-क्या सम्मिलित है इस बारे में लोग जो बता सकते हैं, उन विभिन्न चीजों के बारे में गुरुमाई जी ने बताया। मुझे याद है कि उस समय मैं सोच रही थी कि मैं सन्तोष के भाव से उसी क्षण में ठहर जाऊँ, और गुरुमाई जी जो समझा रही हैं उसे सुनती रहूँ कि प्रेम क्या है और इसमें क्या निहित है, इसके लिए क्या आवश्यक है। मन ही मन मेरे अन्दर एक इच्छा जग रही थी। और हालाँकि वह तुरन्त ही ज़ाहिर नहीं हुई, फिर भी वह अगले कुछ ही सप्ताहों के भीतर फलीभूत हुई, और इतने शानदार व ख़ूबसूरत तरीक़े से फलीभूत हुई कि मैं कभी सोच भी नहीं सकती थी। 'प्रेम की ओर'।

***

वैलेन्टाइन दिवस पर हमें 'प्रेम की ओर' की अन्तिम सिखावनी प्राप्त हुई—यह चरम बिन्दु था, समापन था, एक तरह से, इस अतुलनीय सिखावनी-संग्रह की उत्तमोत्तम सिखावनी। मुझे ऐसा लग रहा है कि पिछले दो सप्ताहों के दौरान हम सभी एक अनोखे ही लोक में थे, एक ऐसे अनूठे प्रेममय वातावरण में जिसमें हमें भर-भरके मिल रहा था और आपका, मेरा, हम सबका पात्र आकण्ठ भरकर छलक गया है। १ फ़रवरी को जब पहली सिखावनी आई थी तब मेरे हृदय में प्रेम उमड़ पड़ा—हर चीज़ के लिए प्रेम, और साथ ही यह प्रेम किसी वस्तु-विशेष के लिए नहीं था, और सबसे अधिक मुझे यह प्रेम अनुभव हो रहा था, गुरुमाई जी के लिए। और फिर दूसरा दिन आया, फिर तीसरा दिन और फिर चौथा, और हर दिन की सिखावनी मेरी पसन्दीदा सिखावनी बन रही थी, मेरे अनुभव का स्वरूप रहा तो वैसा ही पर साथ ही वह बदल भी रहा था—पहले मुझे यह प्रेम के झरने जैसा महसूस हुआ, और फिर कलकल बहती नदी जैसा और फिर ऐसा लगा जैसे यह पूरी तरह प्रशान्त समुद्र हो। हर दिन, यह प्रेम विस्तृत होता जा रहा था; हर दिन, ऐसा लग रहा था मानो प्रेम के लिए मेरी क्षमता बढ़ रही है।

इस बिन्दु पर आकर, यह असम्भव-सा लगता है कि यह प्रेम और भी विस्तृत हो सकता है, तथापि मेरे मन की गहराई में छिपा एक हल्का-सा एहसास है कि ऐसा हो भी सकता है—यह प्रेम अधिक व्यापक हो सकता है। एक बात जो हम निश्चित ही कर सकते हैं वह यह कि हम 'प्रेम की ओर' के अन्तर्गत दी गई सिखावनियों की तरफ़ पुनः-पुनः लौट सकते हैं। उनके साथ कार्य करने के लिए हम अलग-अलग तरीक़ों को अपनाकर देख सकते हैं। क्या मैं आपको एक विशिष्ट तरीक़ा अपनाकर देखने का सुझाव दे सकती हूँ? पहले आप सिखावनी को पढ़ें, फिर उसे सुनें, और फिर उस सिखावनी के लिए अंग्रेज़ी पृष्ठ पर दिए गए संगीत को चलाएँ, सिखावनी को पढ़कर आपने अभी-अभी जो ग्रहण किया है, उस पर मनन करते हुए, संगीत को सुनें। इस संगीत में 'पैन फ़्लूट' [एक प्रकार की बाँसुरी] व अन्य ध्वनियाँ सम्मिलित हैं। संगीत को सुनते हुए अपने अन्दर खुलापन बनाए रखें, देखें कि आपके अन्दर क्या उभरता है—आपके मन में कौन-से विचार, कल्पनाएँ या छवियाँ उभरती हैं, आप कौन-से क़दम उठाना चाहेंगे। मेरे विचार में ऐसा कहना ठीक ही रहेगा कि प्रेरणा किसी भी रूप में उजागर हो सकती है और *होगी भी*।

'प्रेम की ओर . . .' इस पोस्ट की डिज़ाइन के विषय में भी मैं आपको कुछ बताना चाहूँगी। इसके विषय में बताने से पहले मैं यह कहना चाहूँगी कि लगभग हमेशा ही ऐसा होता है कि जब आप सिद्धयोग पथ की वेबसाइट पर कोई डिज़ाइन देखते हैं तब दृष्टि को जो दिख रहा होता है उससे कहीं अधिक विशेषताएँ उसमें छिपी होती हैं। उस डिज़ाइन की ख़ास प्रतीकात्मकता होती है, उसका विशेष महत्त्व होता है। और इस पोस्ट की डिज़ाइन के विषय में भी ऐसा ही है—आपने देखा होगा कि हर सिखावनी

के अंग्रेज़ी पृष्ठ पर, सिखावनी के नीचे की ओर पत्तियों का एक छोटा-सा बूटा है। [इतना ही नहीं, यही पत्तियाँ इस पत्र के अंग्रेज़ी पृष्ठ की डिज़ाइन को भी सुशोभित कर रही हैं।]

ये पत्तियाँ 'कौरी' वृक्ष की हैं जो मूलतः न्यूज़ीलैन्ड में पाया जाता है। गुरुमाई जी ने मुझे बताया कि उन्हें एक विशिष्ट कौरी-वृक्ष से प्रेरणा मिली थी जिसे माओरी भाषा में 'टाने माहूता' कहा जाता है और अकसर इस वृक्ष को 'वन के देवता [या स्वामी]' कहकर सम्बोधित किया जाता है। ऐसा अनुमान है कि यह वृक्ष लगभग दो हज़ार वर्ष पुराना है। गुरुमाई जी ने कहा, "इस पृथ्वी ग्रह के प्रति अपने प्रेम के कारण इतने वर्षों से यह वृक्ष खड़ा हुआ है।"

सिद्धयोग पथ की वेबसाइट की विभिन्न कलाकृतियों यानी डिज़ाइन के बारे में एक और बात यह है कि हम विश्व के जिस क्षेत्र की वनस्पतियाँ, या पशुवर्ग अथवा कलाकृति को वेबसाइट पर प्रदर्शित करना चाहते हैं, हम जितना सम्भव हो कोशिश करते हैं कि ऐसा करने हेतु हम उन अद्‌भुत सिद्धयोगियों की सहायता लें जिन्होंने उस क्षेत्र की यात्रा की हो। अकसर, हम यह भी देखते हैं कि इस विषय में शक्तिपुंज आरकाइव्ज़् के पास क्या-क्या संगृहीत है। सन्दीप क्नोसल जो एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन के वेबसाइट विभाग के प्रमुख हैं, उन्होंने मुझे बताया कि जब उन्हें गुरुमाई जी से 'प्रेम की ओर' पोस्ट के लिए डिज़ाइन हेतु निर्देश प्राप्त हुआ तब उन्हें बिलकुल पता था कि वे किनसे सम्पर्क कर सकते हैं—वे एक ऐसे परिवार को जानते हैं जो न्यूज़ीलैन्ड के इस पवित्र स्थान पर हो आया है, और वे अन्य अनेक सिद्धयोगियों को भी जानते थे जिन्होंने भी इस स्थान की यात्रा की है। जल्द ही, लोग इस स्थान की तस्वीरें भेजने लगे। यह अपने आपमें एक हृदयस्पर्शी उदाहरण है कि कैसे प्रेम भिन्न-भिन्न माध्यमों से आ सकता है—और कैसे उस प्रेम के प्रेरणास्रोत हमारी यादों की तहों में बस जाते हैं।

और अब हम लौटते हैं, 'टाने माहूता' पर : क्या प्रेम का इससे अधिक सटीक प्रतीक हो सकता है भला? इस प्रसिद्ध वृक्ष की ही भाँति, प्रेम चिरकालिक है। इस महान वृक्ष की ही भाँति, प्रेम नूतन है, यह सतत पुनः-पुनः जन्म लेता रहता है। माओरी की परम्परानुसार यह वृक्ष वनों और पक्षियों के देवता हैं। इस वृक्ष की ही भाँति प्रेम आश्रय देता है; प्रेम ऊँचाई तक जाने में सहायक है। पौराणिक कथाओं में इस वृक्ष को मानवजाति का रचयिता कहा जाता है, इस वृक्ष की ही भाँति प्रेम मानव की आत्मा को उसका सार प्रदान करता है। इस वृक्ष की ही भाँति प्रेम महाकाव्य है। इस वृक्ष की ही भाँति प्रेम प्रतिष्ठित है। प्रेम है, था और हमेशा रहेगा।

अपने अनुभवों में आपमें से बहुतों ने गुरुमाई जी की पुस्तक, ‘अन्तर-शुद्धि के सोपान’ में से उनके आदर्श शब्दों को उद्धृत किया : “आदि में प्रेम। अन्त में प्रेम। मध्य में, हमें सद्‌गुणों का विकास करना है।”[१] मैं देख सकती हूँ कि *प्रेम की ओर* बढ़ने का क्या अर्थ है, इस पर विचार करते हुए आपने इन शब्दों के बारे में क्यों सोचा होगा।

आदर सहित,
ईशा सरदेसाई

© २०२४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[१] गुरुमाई चिद्विलासानन्द, *अन्तर-शुद्धि के सोपान : दिव्य सद्‌गुणों का योग,* [चित्‌शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१३], पृ १६८।